।। वेदों में सुर्य ।।

'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषइय' – ऋग्वेद

सूर्य जगत की आत्मा है । सभी ग्रह–उपग्रहों का नियंता है । वही सौर मंडल को उर्जा देता है । उसकी उर्जा से संसार के चराचर में गति, प्रगति, विकास विलास है । सूर्य ही संसार को जीवन शक्ति प्रदान करता है । सूर्य की उर्जा का आधार सोम अर्थात हाइड्रोजन है । सोम से सूर्य को शक्ति मिलती है । सूर्य में दो तत्व होते हैं – १) अपांरसम् (जल) २) उद्वयस (गॅस) । विज्ञान के अनुसार सूर्य में ९० प्रतिशत हायड्रोजन और ८ प्रतिशत हीलियम और २ प्रतिशत अन्य द्रव्य होते हैं । सूरज की सतह का तापमान ७ हजार डिग्री सेंटिग्रेड और अन्दर का तापमान लगभग १ करोड ३० लाख डिग्री सेंटिग्रेड होता है । इसके आंतरिक तापमान के कारण हाइड्रोजन हीलियम के रुप में परिवर्तीत होता है । सायन्स में उसे थर्मो 'न्यूक्लीअर रिॲक्शन' कहा जाता है । गॅस के इन रुपांतरण से सूरज को निरंतर उर्जा मिलती रहती है ।

शकमयं धूमम आराद अपश्यम्

विषूवता पर एनावरेण — ऋग्वेद

ऋग्वेद के दीर्घतमस् ऋषि का कथन है कि मैंने योग दृष्टि से सूर्य के चारों ओर दूर दूर तक शक्तिशाली धूम (गॅस) देखी है । उसे 'शकमयं धूम' कहा गया है ।

सूरज के सात घोडे सप्तरंगी किरणें हैं । जो तीव्र गति से चलती है । उसके रथ पर मित्र और वरुण भी होते हैं । मित्र धनभार (पॉजिटीव चार्ज) और वरुण ऋणभार (निगेटिव चार्ज) है । वे दोनों मिलकर विद्यत चुंबकीय तरंगे प्रवाहित करते है । इस प्रवाहित शक्ति को 'दूत' कहा गया है । जो अति तीव्र ग्रामी होते हैं । इनके कारण ही वर्षा होती है ।

अव दिवरजारयंति सप्त सूर्यस्य रश्मय: ।

आप: समुद्रिया धारा: । — अथर्ववेद

सूरज की किरणों के तीव्र गति को 'आशुमत' और 'रघुष्यद' तीव्र प्रवाहवाला कहा है । सूरज की किरणें संसार के सभी पदार्थों को वर्ण अर्थात रंग देती है । सात किरणें सात रंग निर्माण करती है । जो तीन रुपों में होती है – १) गहरा २) मध्य ३) हल्का ७ X ३ = २१ प्रकार की हो जाती है । वेदों में उसे त्रिषप्ता (७ X ३ = २१) कहा है । इन रंगों के मिश्रण से अन्य बहुत से रंग निर्माण हो जाते हैं ।

ये त्रिषप्ता: परियान्ति विश्वारुपाणि बिभ्रत:

विश्वारुपाणि जनयन युवा कवि: । — अथर्ववेद

संसार के सभी वस्तुओं का रूपरंग देनेवाला सूरज है ।

अथर्ववेद का कथन है कि सूर्य प्रदुषण नाशक है । वह दिखाई देनेवाले (दृष्य) औन न दिखाई देनेवाले (अदृष्य) सभी प्रकार के कृमियों (जर्म्स) को नष्ट करता है ।

उत पुरस्तात् सूर्य एति, दृष्टान्च घ्नन अदृष्टान्च ।

सर्वान् च प्रमृणन् कृमीन । — अथर्ववेद

यजुर्वेद के अनुसार सूर्य अपनी सूक्ष्म और पवित्र किरणों से सारे वायुमंडल को शुद्ध करता है। सूरज की सुषुम्ण नामक किरणें चंद्रमा को प्रकाश देती है । अदिती के पूत्र सूर्य और चंद्र मानवमात्र के जीवन रक्षक है । द्युलोक धारण करनेवाला सूर्य संसार का पालक है । उसके किरणों का गुण है – पदार्थों को फैलाना उन्हे नरम बनाना और द्रवित करना । सूर्य से प्राप्त उर्जा का दोहन त्रित अर्थात तीन देवताओं ने किया । जिसमें इंद्र, गंधर्व और वसु का नाम बताया गया है । इंद्र ने सर्व प्रथम सूर्य की उर्जा का ज्ञान प्राप्त किया, गंधर्व ने उसका परीक्षण किया और वसुओं नें इसको मूर्त रुप दिया । वसु भौतिक विज्ञान के विशेषज्ञ है ।

त्रित एनम् आयुनक्, इन्द्र एवं प्रथमो अध्यतिष्ठत् गन्धर्वो ।

अस्य रशनाम् अगृहणात्, सूरादश्वं वसवो निरतष्ट । — ऋग्वेद

समस्त उर्जा का स्त्रोत सूर्य है । वही उर्जा का स्वामी है । (सविता प्रसवानाम् अधिपति:) सूर्य के सात किरणों से सात प्रकार की उर्जा प्राप्त होती है । इस उर्जा से अन्न (इष्) और शक्ति (उर्ज) प्राप्त होती है । उसकी उर्जा का उपयोग कृषि और उद्योग के लिए होता है —

अधुक्षत् पिप्युषीमिषम उर्ज सप्तपदीमरि: ।

सूर्यस्य सप्त रश्मिभि: — ऋग्वेद

सौर उर्जा प्राप्त करने का श्रेय वशिष्ठ मुनि, उनके पुत्र तथा भरद्वाज ऋषि के वंशजो को जाता है । सूर्य और नदी में अक्षय धन विद्यमान है । वे दोनों संसार को भोजन देते हैं —

अप्सु सूर्ये महद धनम् ।

अश्वारयद् हरितोर्भूरिं भोजनम् ययोरन्तर्हरिश्चरत् — ऋग्वेद

सूर्य की किरणों में घातक द्रव्य होने की संभावना है । इन किरणों से संसार भयभीत रहता है । इन किरणों से रक्षा की प्रार्थना भी की गयी है ।

सूरज की सात किरणें सप्तरश्मि, सप्ताश्व, सप्तसप्नि के रुप में जानी जाती है । इन किरणों का प्रभाव अलग अलग है । इनकी तरंग तथा आवृत्ति भी भिन्न भिन्न है इनके नाम बैं, नी, आ, हा, पी, ना, ला है । बैं–बैंगनी रंग जो शीतल, क्षय रोगनाशक है । नी– नीला रंग है, जो शीतल तथा पितज रोगों का नाशक है । पौष्टिक होता है । आ– आसमानी रंग है जो शीतल एवं ज्वरनाशक

होता है । ह – हरा रंग, समशीतोष्ण एवं वातज रोगों का नाशक, खतशोधक होता है । पी – पीला रंग जो उष्ण, कफज रोगों का नाशक, हृदय तथा उदररोग नाशक होता है । ना – नारंगी उष्ण मानसिक शक्तिवर्धक होता है । ला – लाल अतिउष्ण, कफज रोगों का नाशक, उत्तेजक होता है ।

सूरज के मूल तीन रंग होते हैं – लाल, पीला, नीला । लाल और नीला मिलकर बैंगनी, नीला और सफेद मिलकर आसमानी, नीला और पीला मिलकर हरा, लाल और पीला से नारंगी रंग बन जाता है ।

आचार्य वराहमिहिर ने इंद्रधनुष निर्माण की प्रक्रिया स्पष्ट की है । सूर्य की विविध रंगोंवाली किरणें जब मेघयुक्त आकाश में वायु से टकराकर छिटकती है तब धनुष का रूप धारण करती है वही इंद्रधनुष है ।

सूर्यस्य विविधवर्णा: पवनेन विघट्टिता: करा: साभ्रे

वियति धनु: संस्थाना ये हरयन्ते तन्दिन्द्र धनु: । – बृहत्संहिता (वराहमिहिर)

उसने बिजली का स्वरूप भी स्पष्ट किया है । तर तर शब्द करती हुई गिरती है । दो प्रकार की होती है । १) विद्युत और २) अशनि या वज्रपात । विशाल शरीरवाली, प्राणियों या काष्ठ समुह को जनानेवाली विद्युत है । अशनि या वज्रपातवाली बिजली चक्र की तरह घुमनेवाली भूमि को फाड़नेवाली होती है ।

विद्युत तटतटस्वना सहसा ।

कुटिल विशाला निपतति जी वेन्धनराशिषू ज्वलिता ।

अशनि: स्वेनेन महता

निपतति विदारयन्ती धरातलं चक्रसंस्थाना । – बृहत्सहिंता

बृहत्संहिता में सूर्य और चंद्रमा के चारों ओर बने परिवेश की प्रक्रिया स्पष्ट की है । सूर्य और चंद्रमा की किरणें हलके मेघयुक्त आकाश में वायु के प्रवेश के कारण छिटककर मंडलाकार और नाना वर्ण एवं रंगों में दिखाई देती है ।

संमूर्छिता रवीन्द्रो: किरणा: पवनेन मण्डलीभूता: ।

नानावंर्णाकृतयस्तन्व भ्रे व्योम्नि परिवेषा: । – बृहत्संहिता

ऋग्वेद के आचार्य सायण ने सूर्य के प्रकाश किरणों की गति का स्पष्टीकरण दिया है । उसकी गति आधे निमेष (पलक मारना) में दो हजार दो सौ दो योजन है । महाभारत में कालगणना दी है । आधा निमेष – सेकण्ड का दसवाँ भाग एक निमेष सेकण्ड का पाँचवा भाग,

१५ निमेष का एक काष्ठा, १ काष्ठा २.७ सेकण्ड, ३० काष्ठा की एक कला, (एक कला सव्वा मिनिट) ३० कला का एक मुहुर्त (एक मुहुर्त चालीस मिनिट का) ३० मुहुर्त २४ घण्टे अर्थात एक दिन–रात ।

काष्ठा निमेषा दश पंच चैव ।

त्रिंशतूं तु काष्ठा गणयेत् कलां ताम् ।

त्रिंशत् कलाश्चापि भवेन्मुहुर्तो

भाग: कलाया दशमश्च य: स्पात ।

त्रिंशन्मुहुर्त तु भवेदहश्च – (शांतिपर्व– महाभारत)

ब्राह्मणग्रंथों में कहा गया है कि सूर्य का न उदय होता है, न अस्त । सूर्य अपने स्थान पर रुका हुआ है । पृथ्वी उसके चक्कर काटती है ।

ऋग्वेद में कहा गया है कि सूर्य के आकर्षण के कारण द्युलोक रुका हुआ है । सभी गृह, नक्षत्र, चाँद, तारे, सूर्य की आकर्षण शक्ति से रुके है । उसने पृथ्वी को भी रोका है ।

व्यस्कम्ना रोदसी विफवेते,

दाधर्य पृथिवीमभितो

अदिति से दक्ष (उर्जा) और से अदिति दोनों परस्परावलंबी होते है । पृथ्वी विस्तार एवं उर्जा का आधार सोम (जलयितत्व Hydrogen) है । जो पूरे द्युलोक में व्याप्त है । सोम और अग्नि मिलकर उर्जा निर्माण होती है । उर्जा के कारण सोम में सक्रिया आती है और सृष्टि की प्रक्रिया चालू होती है ।

अग्निषोमात्मकं विश्वम्

अग्निषोमात्मकं जगत्

तेजो रसविभेदैस्तु वृत्तमेतत चराचरम् – बृहंत जाबाल

सृष्टि निर्माण हो गयी । मनुष्य ने इस धरती के विकास हेतू अपनी संस्कृति निर्माण की । लेकिन विकास की प्रक्रिया और भौतिक सुख सुविधाओं के लिए प्रकृति का दोहन किया । प्रकृति – पर्यावरण की हानि होने लगी । भौतिक प्रगति, बढती लोकसंख्या, जंगल कटाई, ग्रीन हाऊस परिणाम् के कारण आज पृथ्वी का तपमान बढ़ने लगा है । पूरा विश्व इससे चिंतित है । लेकिन उसपर उपाय योजना करने की क्षमता न कोयी दर्शाता है न उसका दायित्व कोई स्वीकारता है ।

तपमान बढ़ते–बढ़ते पृथ्वी पर स्थित बर्फ पिघलकर बाढ़ आने की संभावना है । बरसात ऋतू चक्र बिगडने लगा है । पर्यावरण का समतोल ढल गया है । बढते तपमान के कारण पाणी

भाप बनकर ज्यादा बारिश होने की संभावना है यह स्थिती खतरा निर्माण करणेवाली है । जिसके परिणाम प्राणि सृष्टि पर होनेवाले है । महामारी की संभावना है । प्राणी सृष्टि खतरे में है । कोई भी देश एवं उनकी सरकार इसका दायित्व स्वीकार नहीं करती लेकिन हमारा कर्तव्य बनता है कि पृथ्वी की रक्षा करो पर्यावरण के साथ छेडछाड मत करो । सूरज की सौर शक्ति का इस्तमाल कर बडी मात्रा में पेड लगाना । cfc गॅस का निर्माण न करना । भौतिक प्रगति, सुख–सुविधा के नाम पर जंगल, न काटना, पृथ्वी का – प्रकृति का दोहन न करना । निसर्ग ने दिया उसका इस्तेमाल सही दिशा में कर पृथ्वी को बचाना । सूरज की तपिश से बनचे के लिए प्रकृति की रक्षा करना । वेदों के मंत्रो में छिपे गुढ अर्थ को जानकर जो उर्जा है उसी उर्जा का प्रयोग सृष्टि रक्षा के लिए करना । वायु, जल, भूमि, ध्वनि प्रदुषण से बचना । ओजोन की रक्षा करना ।

द्यौ: शान्ति: अन्तरिक्ष शान्ति:, पृथ्वी शान्ति:
अप: शान्ति:, औषधय: शान्ति: वनस्पतय: शान्ति:

प्रा.डॉ.सौ. शेलजा रमेश पाटील
महिला महाविद्यालय, कराड
मो. ९९७०३५२६९८

संदर्भ ग्रंथ –
वेदों में विज्ञान
डॉ. कपिलदेव द्विवेदी